

নানামতি মায়াবাদ (The Doctrine of Maya):

এক অপ্রে বিবেকানন্দকে 'নবা-বৈদ্যন্তিক' (Neo-Vedantist) বলা যায়। কেননা, তিনি মায়াবাদের এক নতুন ধ্যান শাখার করেছেন তাঁর দর্শনে। একথা সত্য যে তিনি অবৈত্ত বেদান্ত থেকে মায়া তত্ত্বকে ধার নিয়েছেন, কিন্তু তাঁর মায়া সম্পর্কিত মতবাদ শক্রাচার্যের মতবাদের অবিকল প্রতিরূপ নয়। শক্রাচার্যের মতো তিনি বিশ্বাস করতেন, মায়া সৃষ্টিকর্তার শক্তি পিলের, কিন্তু অবৈত্ত বেদান্তে বলা হয়েছে মায়াশক্তি ভূম সৃষ্টিকারী। এই ঐতৃষ্ণীক শক্তি মানব মনে এহন যতে, মায়া আবশ্যিকভাবে 'কুহক' অথবা অসতাকে নির্দেশ করে না। বরং এই শক্তির দ্বারা

जगत्तेर घटना समूहेत कथा यला हय। जगत्तेर अतिनिहित ओ अनिवार्य चरित्राति इकाश करत्य।

तीव्र भाषाय विवरणी एहिकम : माया संसार इयस्तेर बाखार तना एका मठबालु
नय संसारेर घटना ये भावे जाते, माया तारौट वर्णना मात्र। अर्थात् एजा बला जले ये, विकृतात्त्वात्
आवादेर अतितेर चिति। सर्वत्र एই उद्गमक विरोधेर शयो दित्रे आमडा चलोहि। येवाने इन्हे
त सेवानेर अम्बल, येवाने अम्बल, सेवानेर अम्बल। येवाने जीवन, सेवानेर ज्ञान
मतो शृङ्खा तार अनुसरण करत्य। ये श्वसचे, ताऱ्हे कौदते दरवे। ये कौदते, से श्वसवे। ए
अवहार अतिकार ओ सप्तव नय। आमडा अवश्य एमन इतन कप्पना करते पारि येवाने केवल इतन
नाई थाकवे, अम्बल थाकवे ना, येवाने आमडा केवल इतन, कौदव ना। किन्तु यथन एই सकल
कारण समजावे सर्वत्र विद्यावान, तथन एकाप घटना इत्तै असप्तव। येवाने आवादेर इत्यावारु
शक्ति आहे, कौदावार शक्तिओ सेवाने अज्ञन आहे। येवाने सुवोंपादक शक्ति आहे। दूरवर्जनक
शक्तिओ सेवाने लूकानो आहे।

‘—ए संस्कर मप्पन ओ अम्बलेर, सूर्य ओ दूरवेर मिश्रण। एकटिके याडाओ देववे अन्तरात्तिओ
सप्ते सप्ते वेडे गेहे। केवल सूर्येर संसार वा केवल दूरवेर संसार इत्ते पारे ना। एवरकम
धारणाई इ-विरोधी।’ सुत्राः ‘माया’ हल ‘विकृता’ (contradiction) तद्वेर सुविधाजनक
एका नाम यार द्वारा जगत्तके स्पष्टतावे वर्णना करा याय। आवादेर समग्र जीवन हल एই
विकृता। सत्त ओ अ-सत्तार समाहार। एक समय आसे, यथन मने हय कोन यक्ति समत्त किछुके
घाने, समत्त वाखावे अतिक्रम करत्तेत पारे। आवार एमन एक सवय आसे, यथन सेइ यक्तिइ
तावे तार सामने एक अनतिक्रम वाखा रुद्देहे। तार कार्यक्रम चक्राकात्रे आवर्तित इत्ते थके।
एই आवर्तेर वाईरे से येते पारे ना’।

विवेकानन्द वलहेन, याके तुमि जड वल, आखा वल, अधवा मन वल अधवा या किछु वल, घटना
एकै थाके, ताके ‘आहे’ क्लाओ याय ना, आवाः ताके ‘नाहि’ वलत्तेओ पारि ना। आमडा ताके
‘एक वलत्तेओ पारि ना। आवार ताके ‘वह’ वलत्तेओ पारि ना। चिरत्तन आलो-अष्टकारे खेला
चलहे—याके कोनतावेइ विभाजन करा याय ना। ‘माया’ हल एই ‘घटना’ मात्र।

मायार एই व्याख्यार एकटि विराट सुविधा आहे। एই व्याख्या यक्तिओ वैदातिक व्याख्यार
थेके पृथक, किन्तु वैदातिक व्याख्यार विकृता करे ना। कैदाते वला इत्येहे, माया हल ऐश्वर्यक
शक्ति—यार द्वारा ‘जगत् तत्’ (World-illusion) सृष्टि हय। विवेकानन्द तार सप्ते यूत
व्यवहारे : एই शक्ति निजे जलाओ नय फूदव नय—एटि निरपेक। सुत्राः मायार एक निरपेक
जाय आहे। मायार एই निरपेक चरित्रके जाना याय, केवलमात्र यदि मायाके जगत्तेर नाना इ-
विज्ञातिर एकटि नाम हिसाबे विवेचना करा याय।

विवेकानन्द एकथा दीक्षार क्षेत्रहिलेन केवल निस्त्रेर दृष्टिलेण थेके मायार सत्तार
आहे। अवे तिनि ज्ञानत्तेन, परिगावे समत्त विकृतार अवसान घटवे। एই एस्त्रे तिनि एकटि
उपमा यावहार करत्तेहेन। ‘सागर एवं तार ढेऊ।’ सागरेओ ढेऊज्ज्वला सागरेलै जल जड
आर किछु नय, तवू तादेर आलादा रुप और नाम आहे। ढेऊके कि सागर थेके एकेवात्रे
एक करे चिन्ता करत्ते पारि? कर्वनै ना समूद्रेर धारणार ओपवै ता निर्तर कराहे। यदि एই
पृष्ठः-१

চেউ চলে যায় তাহলে কুপও অস্তর্হিত হল। কিন্তু এই কুপটি যে একেবারে ভবাষ্টকে ছিল তা ও নহ। যতক্ষণ ওই চেউ ছিল ততক্ষণ কুপও ছিল এবং বাধ্য হয়ে সেই কুপও তোমাকে দেবতে হত— এই-ই হল মায়া। অতএব এই সমগ্র ঝঁঝৎ যেন সেই প্রস্তোর এক বিশেষ কুপ। প্রশ্নাই সেই নাম আর তুমি-আমি সূর্য, তারা—সবই সেই সাগরের তিমি ভিম চেউ এধু। চেউকে সাগর থেকে ছি করে কে? কুপ। আর ওই কুপ-দেশ-কাল-নিমিত্তের ঘটনা ছাড়া আর বিছুই নয়। ওই দেশ-কাল-নিমিত্ত আবার সম্পূর্ণকাপে ওই চেউগুলোর ওপর নির্ভর করছে। যেই চেউ চলে গেল অর্থাৎ সবই চলে গেল। জীবাদ্যা যখনই এ মায়া পরিত্যাগ করে, তখনই তার কাছে তা অস্তর্হিত হয়, মেঘ মুক্ত হয়ে যায়। আমাদের সব চেষ্টাই এই দেশ-কাল-নিমিত্তের ওপর নির্ভরশীলতা থেকে নিজেদের রক্ষা করা। এরা সব সময় আমাদের উপরিতির পথে বাধা দিচ্ছে আর আমরা চেষ্টা করছি এর কল্পনা থেকে নিজেদের মুক্ত করতে।'

বেদাস্তে যেমন মায়াকে 'অনিবর্চনীয়' কলা হয়েছে, বিবেকানন্দও একই রূপ ব্যাখ্যা দিয়েছেন যখন তিনি বলছেন, মায়াকে অস্তিত্বশীল অথবা অনাস্তিত্বশীল বলা যায় না। চরব সত্ত্ব এবং অসত্ত্বার মাঝেই মায়াকে তিনি স্থাপন করেছেন। তিনি বলছেন, 'শূন্য থেকে ফিল্টার উৎপন্ন হয় না। সকল জিনিসই অনন্তকাল রয়েছে এবং থাকবেও অনন্তকাল। কাল চেউরের মতো একবার উঠছে আবার পড়েছে। সৃজ্জন অব্যক্তভাবে একবার নয়, দ্঵ন্দ্ব ব্যক্তভাবে একবার—সমগ্র প্রদত্তিতেই এই ক্রমসকোচ ও ক্রমবিকাশ চলছে। সুতরাং সমগ্র প্রশ্নাও থকাশের আগে অবশ্যই ত্রামনসূচিত বা অব্যক্ত অবস্থায় ছিল, এখন নানাকাপে ব্যক্ত হয়েছে, আবার ক্রমসূচিত হয়ে অবাক্ত তাব ধারণ করবে।'

যে ভাব।

কর্মের পথ (কর্মযোগ):

বিবেকানন্দের মতে, "কর্মযোগ হল কর্মের দ্বারা চিত্তসুষ্ঠি করা। ভালো অথবা মন্ত কর্ম করাখে এই কর্মের ফল অবশ্যই ভালো বা মন্ত হবে। যদি অন্য কোন কারণ না থাকে তবে কোনো শক্তিই ভাব কাজ রেখ করতে পারে না। সৎকর্মের ফল সৎ এবং অসৎ কর্মের ফল অসৎ হবে। এবং মুক্তির কোনো সত্ত্বাবন্ন না রয়ে আপ্তা চিরব্যানের মধ্যে আবক্ষ থাকবে। কর্মের ভোক্তা দেহ অথবা মন। আপ্তা কখনই কর্মের ভোক্তা হতে পারেনা; কর্ম কেবল আপ্তার সম্মুখে একটি আবরণ নিষ্কেপ করতে পারে। অবিদ্যা - অতড় কর্মের দ্বারা নিষ্ক্রিয় আবরণ। সৎ কর্ম নৈতিক শক্তিকে দৃঢ় করতে পারে এবং এইভাবে নৈতিক শক্তির দ্বারা অনাসক্তির অভ্যাস হয়। নৈতিক শক্তি অসৎ কর্মের প্রবণতা উৎপাদন করে এবং চিত্ত ওক্ত করে। কিন্তু যদি ভোগের উদ্দেশ্যে কর্ম করা হয়, তাহলে এই কর্ম সেই বিশেষ ভোগটি উৎপাদন করলেও চিত্ত ওক্ত করবে না। সুতরাং ফলাসক্তিশূন্য হয়ে সবস্তু কর্ম করতে হবে।

কর্মযোগীকে সমস্ত ভয় ও ইহামুক্তফলভোগ চিরকালের জন্যে ত্যাগ করতে হবে। উপরন্তু এমনাবিহীন কর্মসকল বস্তানের মূল স্বার্থপূরতা বিনষ্ট করবে। কর্মযোগীর মূলমন্ত্র 'নাহং নাহং'

বিংশ শতাব্দীর ভারতীয় দশন

২৮

"তৃষ্ণ তৃষ্ণ" এবং কোনো আধ্যাত্মিক গভীর পদ্ধে থাইতে নয়। শুর্গপ্রাণি নাম, যশ বা কোনো জাগতিক সাক্ষর জন্ম তিনি কর্ম করেন না। এই নিঃস্থার্থ কর্মের ব্যাখ্যা ও উপপত্তি কেবল জ্ঞানযোগেই আছে।'

আসন্নিকভাবে তিনি গীতার নিষ্ঠাম কর্মের উদাহরণ দিয়ে কর্মযোগের পথ সম্পর্কে বলেছেন, 'গীতা কর্মযোগ শিক্ষা দেয়। যোগারাত হয়ে আমাদের কর্ম করতে হবে। এই যোগযুক্ত অবস্থায় হেট 'অহঃ' বোধ থাকেনা। যোগযুক্ত হয়ে কর্ম করলে 'আমি এটা করেছি, এটা করেছি'— এই বোধ কখনও থাকেনা। পাশ্চাত্যের লোকেরা এই বোধ হৃদয়স্থ করতে পারে না। তারা বলে যে, যদি এই অহঃবোধ না থাকে, যদি এটা বিলুপ্ত হয় তবে মানুষ কি ভাবে কর্ম করতে পারে? দিস্ত আমিত্বোধ ত্যাগ করে যোগযুক্ত চিত্তে কর্ম করলে তা অনঙ্গেন উৎকৃষ্টতর হবে এবং প্রত্যেকেই নিজের জীবনে এটা অনুভব করে থাকবে।

আমরা খাদ্যের পরিপাকজিল্লা প্রভৃতি বহু কর্ম অবচেতনভাবে করি। অন্যান্য অনেক কর্ম আমরা খাদ্যের পরিপাকজিল্লা প্রভৃতি বহু কর্ম অবচেতনভাবে করি। সমাধিমগ্ন হয়ে দ্রুতি। তিক্রিক যদি জ্ঞাতসারে, আবার অনেক কর্ম দ্রুতি আমিত্বের লোভে যেন সমাধিমগ্ন হয়ে দ্রুতি। তিক্রিক যদি অহংকারে দ্রুলে চিরাক্ষেপে সম্পূর্ণরূপে নিমগ্ন হয়, তবে সে অপূর্ব সুন্দর দ্রুবিগুলো অঁকতে পারবে। অহংকারে দ্রুলে চিরাক্ষেপে সম্পূর্ণরূপে নিমগ্ন হয়, তাতেই সে সম্পূর্ণ মন দিয়ে থাকে। তখন ভালো পাচক যেসব খাদ্যবস্তু নিয়ে কাজ করে, তাতেই সে সম্পূর্ণ মন দিয়ে থাকে। তখন সাময়িকভাবে তার অন্যান্য বোধ সবই চলে যাব। এভাবেই তারা তাদের অভ্যন্তর কোনো কাজ নিখুঁতভাবে সম্পাদন করতে সমর্থ হয়। গীতা আমাদের শিক্ষা দেয় যে, সমস্ত কর্মই এভাবে সম্পূর্ণ হওয়া উচিত। যিনি ইশ্বরের সঙ্গে একাত্মতা অনুভব করেছেন, তিনি যোগযুক্ত হয়ে সমস্ত কর্ম করেন। ব্যক্তিগত স্বার্থ থেকে নান। এভাবে কর্মসম্পাদন দ্বারাই জগতের মন্তব্য হয়। তা থেকে কোনো অমন্তব্য হতে পারে না।'

তিনি মনে করতেন এই নিঃস্থার্থ কর্মের দ্বারাই আমাদের মন শুক হয়ে ওঠে এবং আমরা সকলের সাথে নিজেকে এক করে চিনতে পারি। এই উপলক্ষ্মী অগরত্ত।
মনোবিজ্ঞনের পথ (রাজযোগ):